तपश्चर्यारत संयमी जीवन में आपको रात्रि में पानी तक रखने की आवश्यकता नहीं पड़ती थी। पीछे जब साधु समुदाय बढ़ा तब रखने लगे। एकबार आप प्राचीन तीर्थ श्रीओसियां पधारे तो वहां का मन्दिर-गर्भगृह और प्रभु प्रतिमा तक बालु में ढंके हुए थे। आपने जबतक जीर्णोद्धार कार्य न हो विगय का त्याग कर दिया। पीछे नगरसेठ को मालूम पड़ा और जीर्णोद्धार करवाया गया। ओसियां के मन्दिर में आपश्री की मूर्त्ति विराजमान है।

आपने मारवाड़, गुजरात, काठियावाड़ आदि अनेक ग्राम नगरों में अप्रतिबद्ध विहार किया था। बम्बई जैसी महानगरी में जैन साधुओं का विचरण सर्वप्रथम आपने ही प्रारंभ किया। वहाँ आपका बड़ा प्रभाव हुआ, वचन-सिद्ध प्रतापी महापुरुष तो थे ही, बम्बई में घर घरमें आपके चित्र देखे जाते हैं। आपने अनेकों भव्यात्माओं को देशविरति-सर्वविरति धर्म में दीक्षित किया। आपका विशाल साधु समुदाय हुआ। अनेक स्थानों में जीर्णोद्धार-प्रतिष्ठाएँ आदि आपके उपदेशों से हुई। सं० १९४१ में महातीर्थ शत्रुञ्जय की तलहट्टी में मुर्शिदाबाद निवासी रायबहादुर बाबू धनपतसिंहजी दुगड़ द्वारा निर्मापित विशाल जिनालय की प्रतिष्ठा-अंजनशलाका आपही के कर-कमलों से सम्पन्न हुई थी।

आपका शिष्य परिवार विशाल था, आपमें सर्वगच्छ समभाव का आदर्श गुण था अतः आपका शिष्य समुदाय आज भी खरतर और तपगच्छ दोनों में सुशोभित है। आपके व आपके शिष्यों द्वारा अनेक मन्दिरों, दादावाड़ियों के निर्माण, जीर्णोद्धारादि हुए, ज्ञानभंडार आदि संस्थाएं स्थापित हुई, साहित्योद्धार हुआ। आप अपने समय के एक तेजस्वी युगपुरुष थे। निर्मल तप-संयम से आत्मा को भावित कर अनेक प्रकार से शासन-प्रभावना करके सं० १९६४ वैशाख कृष्ण १४ को सूरत नगर में आप समाधि पूर्वक स्वर्ग सिधारे।

आचार्य-प्रवर श्रीजिनयशःसूरिजी

[भँवरलाल नाहटा]

खरतर गच्छ विभूषण, वचनसिद्ध योगीश्वर श्री मोहन-लालजी महाराज के पट्ट-शिष्य श्री यशोमुनिजी का जन्म सं० १९१२ में जोधपुर के पूनमचंदजी सांड की धर्मपत्नी मांगोबाई की कुक्षि से हुआ। इनका नाम जेठमल था, पिताश्री का देहान्त हो जाने पर अपने पैरों पर खड़े होने और धार्मिक अभ्यास करने के लिये माता की आज्ञा लेकर किसी गाड़ेवाले के साथ अहमदाबाद की ओर चल पड़े। इनके पास थोड़ा सा भाता और राह खर्च के लिये मात्र दो रुपये थे। इनके पास पार्श्वनाथ भगवान के नाम का संबल था अतः भूख प्यास का ख्याल किये बिना आवरत यात्रा करते हुए अहमदाबाद जा पहुँचे। किसी सेठ की दुकान में जाकर मधुर व्यवहार से उसे प्रसन्न कर नौकरी कर ली और निष्ठापूर्वक काम करने लगे। मुनि महाराजों के पास धार्मिक अभ्यास चालू किया एवं व्याख्यान-श्रवण व पर्वतिथि को तपश्या करने लगे। एकबार कच्छ के परासवा गांव गए; जहां जीतविजयजी महाराज का समागम हुआ। आपकी धार्मिकवृत्ति और अभ्यास देखकर धर्माध्यापक रूप में नियुक्ति हो गई। धार्मिक शिक्षा देते हुए भी आपने ४५ उपवास की दीर्घतपश्चर्या की। स्वधर्मी-बन्धुओं के साथ समेतसिखरजी आदि पंचतीर्थी की यात्रा की।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पन्द्रह वर्ष के दीर्घ प्रवास से जेठमलजी जोधपुर लौटे और विनयपूर्वक माता को स्थानकवासी मान्यता छुड़ाकर जिनप्रतिमा के प्रति श्रद्धालु बनाया। तदनन्तर उन्होंने ५१ दिन की दीर्घ तपश्चर्या प्रारम्भ की दीवान कुंदनमलजी ने बड़े ठाठसे अपने घर ले जाकर पारणा कराया। माता-पुत्र दोनों वैराग्य रस ओत-प्रोत थे। माता को दीक्षा दिलाने के अनन्तर जेठमलजी ने खरतरगच्छ नभोमणि श्री मोहनलाल जी महाराज के वन्दनार्थ नवाशहर जाकर दीक्षा की भावना व्यक्त कर जोधपुर पधारने के लिये वीनती की। गुरुमहाराज के जोधपुर पधारने पर आपने सं० १९४१ जेठ शु०५ के दिन उनके करकमलों से दीक्षा ली और 'जसमुनि' बने। व्याकरण, काव्य, जैनागमादि के अभ्यास में दत्त-चित होकर अभ्यास करते हुए गुरुमहाराज के साथ अजमेर, पाटण और पालनपुर चातुर्मास कर फलोदी पधारे। जोधपुर संघ की वीनती से गुरु महाराजने जसमुनिजी को वहां चातुर्मास के लिये भेजा। तपस्वी तो आप थे ही सारे चातुर्मास में आयंबिल तप करते तथा उत्तराध्ययन सूत्र का प्रवचन करते थे। अपनी भूमि के मुनिरत्न को देख संघ आनन्द-विभोर हो गया। चातुर्मास के अनन्तर फलोदी पधार कर गुरुमहाराज के साथ जेसलमेर, आबू, अचलगढ आदि तीर्थों की यात्रा करते हुए अहमदाबाद पधार कर चातुर्मास किया। तदनन्तर पालीताना, सूरत, बंबई, सूरत, पालीताना चातुर्मास किया सातवें चातुर्मास में आपने गुणमुनि को दीक्षित किया।

सिद्धाचलजी की जया तलहटी में राय धनपतसिंहजी बहादुर ने धनवसी टुंक का निर्माण कराया। उनकी धर्म-पत्नी रानी मैनासुन्दरी को स्वप्न में आदेश हुआ कि जिनालय की प्रतिष्ठा श्री मोहनलालजी महाराज के करकमलों से करावे। उन्होंने बाबूसाहब को अपने स्वप्न की बात कही। उनके मन में भी वही विचार था अतः अपने पुत्र बाबू नरपतसिंह को भेजकर महाराज साहब को प्रतिष्ठा के हेतु पालीताना पधारने की प्रार्थना की।

बाबू साहब की भक्तिसिक्त प्रार्थना स्वीकार कर पूज्यवर श्री मोहनलालजी महाराज अपने शिष्य समुदाय सहित पालीताना पधारे और नौ द्वार वाले विशाल जिनालय की प्रतिष्ठा सं० १९४९ माघ सुदि १० के दिन बड़े ठाठ के साथ कराई। १५ हजार मानव मेदिनी की उपस्थिति में अंजनशलाका के विधि-विधान के कार्यों में गुरु महाराज के साथ श्रीयशोमुनि जी की उपस्थिति और पूरा पूरा सहयोग था।

इसी वर्ष मिती अषाढ़ सुदि ६ को चूरु के यति राम-कुमारजी को दीक्षा देकर ऋद्धिमुनिजी के नाम से यशो-मुनिजी के शिष्य प्रसिद्ध किये। फिर केवलमुनि और अमर मुनि भी आपके शिष्य हुए। सूरत-अहमदाबाद के संघ की आग्रहभरी वीनती थी। अतः सं० १९५२-५३ के चातुर्मास सूरत में करके अहमदाबाद पधारे। सं० १९५४-५५-५६ के चातुर्मास करके पन्यास श्री दयाविमल जी के पास ४५ आगमोंके योगोद्वहन किये। समस्त संघ ने आपको पन्यास और गणिपद से विभूषित किया। तदनन्तर गुरु महाराज के चरणों में सूरत आकर हर्षमुनिजी को योगोद्वहन कराया। सं० १९५७ सूरत चौमासा कर १९५८ बम्बई पधारे और हरखमुनिजी को पन्यास पद प्रदान किया।

राजस्थान में धर्म प्रचार और विहार के लिये गुरु महाराज की आज्ञा हुई तो आपश्री ने सात शिष्यों के साथ शिवगंज चातुर्मास कर उपधान कराया। राजमुनिजी के शिष्य रत्नमुनिजी, लब्धिमुनिजी और हेतश्रीजी को बड़ी दीक्षा दी। सं० १९६० का चातुर्मास जोधपुर में किया और सं० १९६१ का चातुर्मास अजमेर विराजे। इसी समय कान्फ्रेन्स अधिवेशन पर गए हुए कलकत्ताके राय बद्रीदास मुकीम बहादुर, रतलाम के सेठ चांदमलजी पटवा, ग्वालियर के रायबहादुर नथमलजी गोलछा और फलौदी के सेठ फूलचन्दजी गोलछा ने श्री मोहनलालजी महाराज

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

महान् प्रतापी श्रीमोहनलालजी महाराज

महान् तपस्वी श्रीजिनयशःसूरिजी महाराज

जैनाचार्य श्री जिनऋद्धिसूरिजी महाराज

विद्वद्वर्य उपाध्याय श्री लब्धिमुनिजी

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मस्तयोगी श्री ज्ञानसागरजी और वा० जयकीर्त्तिजी

जैनाचार्य श्री जिनहरिसागरसूरिजी शिष्य रत्न मुनि कान्तिसागरजी व दर्शनसागरजी

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

से अर्ज की कि आप खरतर गच्छ के हैं और इधर धर्म का उद्योत करते हैं तो राजस्थान, उत्तर प्रदेश और बंगाल को भी धर्म में टिकाये रखिये ! गुरुमहाराज ने पं० हरखमुनिजी को कहा कि तुम खरतरगच्छ के हो, पारख गोत्रीय हो अतः खरतर गच्छ की क्रिया करो। पंन्यास जी ने गुर्वाज्ञा-शिरोधार्य मानते हुए भी चालू क्रिया करते हुए उधर के क्षेत्रों को संभालने की इच्छा प्रकट की। गुरुमहाराज ने अजमेर स्थित हमारे चरित्र नायक यशोमुनि जी को आज्ञापत्र लिखा जिसे उन्होंने सहर्ष स्वीकार किया। गुरु महाराज को इससे बड़ा सन्तोष हुआ। चातुर्मास बाद पन्यास जी बम्बई की ओर पधारे और दहाणु में गुरुमहाराज के चरणों में उपस्थित हुए। आपने गुरु-महाराज की बड़ी सेवाभक्ति की, वेयावच्च में सतत् रहने लगे।

एकदिन गुरुमहाराज ने यशोमुनिजी को बुलाकर शत्रुञ्जय यात्रार्थ जाने की आज्ञा दी। वे ८ शिष्यों के साथ वल्लभीपुर तक पहुँचे तो उन्हें गुरुमहाराज के स्वर्गवास के समाचार मिले।

सं० १९६४ का चातुर्मास पालीताना करके सेठाणी आणंदकुंवर बाई की प्रार्थना से रतलाम पधारे। सेठानीजी ने उद्यापनादिमें प्रचुर द्रव्य व्यय किया। सूरत के नवलचन्द भाई को दीक्षा देकर नीतिमुनि नाम से ऋद्धिमुनिजी के शिष्य किये। इसी समय सूरत के पास कठोर गांव में प्रतिष्ठा के अवसर पर एकत्र मोहनलालजी महाराज के संघाड़े के कान्तिमुनि, देवमुनि, ऋद्धिमुनि, नयमुनि, कल्याणमुनि क्षमामुनि आदि ३० साधुओं ने श्रीयशोमुनिजी को आचार्य पद पर प्रतिष्ठित करने का लिखित निर्णय किया।

श्रीयशोमुनिजी महाराज सेमलिया, उज्जैन, मक्सीजी होते हुए इन्दौर पधारे और केशरमुनि, रतनमुनि, भावमुनि को योगोद्वहन कराया। ऋद्धिमुनिजी भी सूरत से विहार कर मांडवगढ में आ मिले। जयपुर से गुमानमुनिजी भी गुणा की छावनी आ पहुँचे। आपने दोनों को योगोद्वहन क्रिया में प्रवेश कराया। सं० १९६५ का चातुर्मास ग्वालियर में किया। योगोद्वहन पूर्ण होने पर गुमानमुनिजी, ऋद्धिमुनिजी और केशरमुनिजी को उत्सव पूर्वक पन्यास पद से विभूषित किया। पूर्व देश के तीर्थों की यात्रा की भावना होने से ग्वालियर से विहार कर दतिया, झांसी, कानपुर, लखनऊ, अयोध्या, काशी, पटना होते हुए पावापुरी पधारे। वीरप्रभु की निर्वाणभूमि की यात्रा कर कुंडलपुर, राजगृही, क्षत्रियकुंड आदि होते हुए सम्मेतशिखरजी पधारे। कलकत्ता संघ ने उपस्थित होकर कलकत्ता पधारने की वीनति की। आपश्री साधुमण्डल सहित कलकत्ता पधारे और एक मास रहकर सं० १९६६ का चातुर्मास किया। सं० १९६७ अजीमगंज और सं० १९६८ का चातुर्मास बालूचर में किया। आपके सत्संग में श्रीअमरचन्दजी बोथरा ने धर्म का रहस्य समझकर सपरिवार तेरापंथ को श्रद्धात्यागकर जिनप्रतिमा की दृढ़ मान्यता स्वीकार की। संघ की वीनति से श्रीगुमानमुनिजी, केशरमुनिजी और बुद्धिमुनिजी को कलकत्ता चातुर्मास के लिए आपश्री ने भेजा।

आपश्री शान्तदान्त, विद्वान और तपस्वी थे। सारा संघ आपको आचार्य पद प्रदान करने के पक्ष में था। सूरत में किये हुए ३० मुनि-सम्मेलन का निर्णय, कृपाचन्द्रजी महाराज व अनेक स्थान के संघ के पत्र आजाने से जगत् सेठ फतेचन्द, रा० ब० केशरीमलजी, रा० ब० बद्रीदासजी, नथमलजी गोलछा आदि के आग्रह से आपको सं० १९६९ ज्येष्ठ शुद ६ के दिन आपको आचार्य पद से विभूषित किया गया। आपश्री का लक्ष आत्मशुद्धि की ओर था मौन अभिग्रह पूर्वक तपश्चर्या करने लगे। पं० केशरमुनि भावमुनिजी साधुओं के साथ भागलपुर, चम्पापुरी, शिखरजी की यात्रा कर पावापुरी पधारे। आश्विन सुदी में आपने ध्यान और जापपूर्वक दीर्घतपस्या प्रारम्भ की। इच्छा न होते हुए भी संघ के आग्रह से मिगसरवदि १२ को ५३ उपवास का पारणा किया। दुपहर में उल्टी होने के बाद अशाता बढ़ती गई और मि० सु०३ सं० १९७० में समाधि पूर्वक रात्रि में २ बजे नश्वर देह को त्यागकर स्वर्गवासी हुए। पावापुरी में तालाब के सामने देहरी में आपकी प्रतिमा विराजमान की गई।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org